



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरूक	०५-०९-२३	३	१-३

हकूमी की विकसित सरसों की किस्म सुधारेगी सेहत

अग्रिम धनवन • हिसार

लोगों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकूमी) के विज्ञानियों ने उच्च गुणवत्ता युक्त सरसों का बीज तैयार किया है। सरसों की इस संवर्धित किस्म आरएच-1706 में इरुसिक अम्ल दो प्रतिशत से भी कम है। तेल की मात्रा अधिक होने के कारण किसानों के लिए अर्थिक दृष्टि से भी यह तेल फायदेमंद होगा। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाठुजा ने बताया कि जो सरसों का तेल घरों में प्रयोग किया जाता है उसमें इरुसिक अम्ल ज्यादा होता है। यह हृदयरोगियों के लिए अच्छा नहीं है। इसे देखते हुए विज्ञानियों ने रिसर्च कर इस बीज को तैयार किया है, जो उत्पादन बढ़ाएगा और स्वास्थ्य के लिए काफी लाभदायक होगा।

हकूमी की तरफ से तैयार सरसों की आरएच-1706 किस्म 136 से 142 दिनों में पककर तैयार होती है तथा औसतन 10.5 से 11.5 विवर्टल प्रति एकड़ पैदावार देती

- आरएच 1706 - हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की सरसों की पहली उच्च तेल गुणवत्ता वाली किस्म

- तेल में इरुसिक अम्ल की मात्रा दो प्रतिशत से कम होने व तेल की मात्रा 38% होने से किसानों को लाभ



हकूमी की तरफ से विकसित सरसों की नई किस्म। ● सौजन्य: हकूमी विज्ञानियों की तरफ से उपलब्ध

30 सितंबर से बिजाई का समय

नई सरसों का बीज किसानों को जल्द उपलब्ध करवाया जाएगा। किसान इस फसल की बिजाई 30 सितंबर से 20 अक्टूबर के बीच कर सकते हैं। इसमें सिंचाई वाले क्षेत्र में प्रति एकड़ में सवा किलोग्राम बीज डाला जा सकेगा।

विश्वविद्यालय किसानों के लिए लगातार अधिक उपज व उच्च गुणवत्ता की नई विकसित कर रहा है। पिछले दो वर्षों में विवि ने 18 उच्च स्तर की किस्में किसानों तक पहुंचाई है। सरसों की इस किस्म से निकलने वाला तेल मनुष्य को स्वस्थ रखेगा साथ ही किसानों की आय भी बढ़ेगी। —ग्रो. बीआर काम्होज, कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार।



है। इसके पौधों की ऊंचाई मध्यम होती है व शाखाओं की संख्या होती है। इसमें तेल की मात्रा फायदा होगा साथ ही किसानों की लगभग 38 प्रतिशत है। आम सरसों में तेल की मात्रा करीब 30 प्रतिशत होती है। इससे आम आदमी को आमदनी भी बढ़ेगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभूत ३जाला	०३-०९-२३	०३	२.५

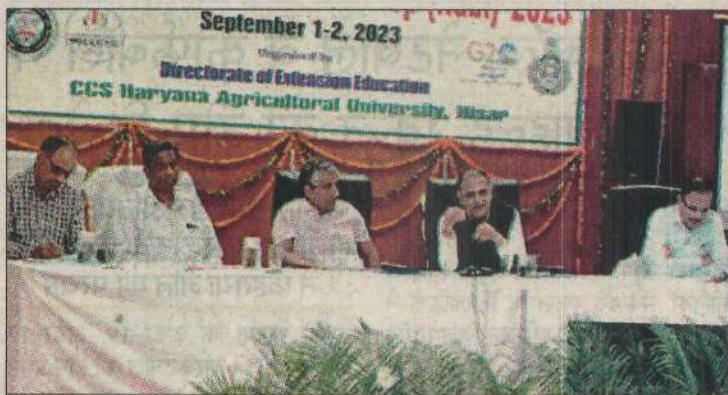
मोबाइल एप के जरिये वैज्ञानिक करेंगे किसानों की समस्याओं का समाधान

हृषि में दो दिवसीय कार्यशाला संपन्न, सरसों की दो, गन्ने व मक्का की एक-एक किस्म की सिफारिश

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं का जलदी निवारण करने के लिए कृषि विभाग मोबाइल एप विकसित करा रहा है। जिससे किसान वैज्ञानिकों से सीधे तौर पर जुड़कर समस्याओं का समाधान ले सकेंगे। कृषि अधिकारी किसान के खेत पर लगे हुए प्रदर्शन प्रक्षेत्र की वीडियो बनाकर भी अन्य किसानों के साथ शेयर करें। गन्ने की अधिक पैदावार देने वाली किसों के बारे अधिक जागरूकता फैलाएं। प्रोत्साहन राशि देकर उनका रकबा बढ़ाने के लिए प्रयास करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ। मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई



हृषि में आयोजित दो कार्यशाला में मौजूद अधिकारीगण। स्रोत विवि

की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहां कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई

समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्लान करके चलते हैं। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझे, उसके बाद उन समस्या के निवारण पर शोध करें।

इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नर हरि बांगड़ मौजूद रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा

ये सिफारिशें स्वीकृत की गईं

■ आर.एच 1424 : राशा की यह किस्म जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के बारानी क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए वर्ष 2023 में अनुमोदित की गई है। यह किस्म 137-140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है तथा 10.5-11.0 किंवटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इसकी फलिया लंबी व मोटी होती है व इसके दानों का आकार भी बड़ा होता है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 40.5 प्रतिशत है।

■ आर.एच. 1705 : यह विश्वविद्यालय की राशा की पहली तेल गुणवत्ता युक्त उन्नत किस्म है, जिसकी वर्ष 2023 में जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए सिफारिश की गई है। यह किस्म 136-142 दिनों में पक कर 10.5-11.5 किंवटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इस किस्म के दानों में तेल की औसत मात्रा 38.0 प्रतिशत है।

■ गन्ने की फसल में टॉप बोर व अर्लिशूट बोर के नियन्त्रित करने वाले कीटनाशक, जिसका नाम पहले राइनास्पर 20ईसी (कोराजन) से बदलकर बल्टोरनट्रानिलिप्रोल 18.5 एस.सी. (कोराजन) हो गया है।

■ मक्का की संकर किस्म एच एच एम - 1 में मेडिश लीफ ब्लाइट व रुतुआ की समस्या बढ़ने से इस किस्म को समग्र सिफारिशों से हटाया गया है, जिससे कि किसान इसको न लगाए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत सभापात्र	03-09-23	05	2-8

किसानों की समस्याओं को समझकर करें अनुसंधान : प्रो. काम्बोज //

हिसार, 2 अक्टूबर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि विश्व अतिथि अधिरिक मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बांगवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रखी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर.

काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आवाहन किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहाँ कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिकों के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुरूप ही अपनी शोध कार्य प्रारंभ करके जल्ते हैं ताकि ये समस्या दोषारा न आए व किसान की आमदनी बढ़े। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आहान

किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे हांग से सघबे, उसके बाद उन समस्या के निवारण पर शोध करें। अतिथि मुख्य सचिव विश्वविद्यालय के निवारण पर शोध करें। अतिथि कृषि विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि कुमार एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि

अपनी समस्याओं का समाधान ले सकें। इस अवसर पर



किस्म जम्मू, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के बारानी क्षेत्रों में समय पर विजाहि के लिए वर्ष 2023 में अनुमोदित की गई है। यह किस्म 137-140 दिनों में पकाकर तैयार हो जाती है तथा 10.5-11.0 किटल प्रति एकड़ औसत पैदावार देती है। इसकी फलिया लंबी व मोटी होती है व इसके दानों का आकार भी बड़ा होता है। इस किस्म में तेल की औसत मात्रा 40.5 प्रतिशत है।

गंत्री की फसल में टॉप बोरर व अर्लिंग्टॉट बोरर को नियोजित करने वाले कौटनाशक, जिसका नाम पहले राइनास्पर 20ईसी (कोराजन) से बदलकर क्लोरनट्रिनिलिप्रोल 18.5 एस.सी (कोराजन) हो गया है। यक्का की संकर किस्म एच एच एम - 1 में मेडिश लीफ ब्लाइट व रुआ की समस्या बढ़ने से इस किस्म को समग्र सिफारिशों से छाटा गया है, जिससे कि किसान इसको न लगाए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बांगवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं का जल्दी निवारण की समस्याओं का जल्दी निवारण की चाहिए, जिसके लिए कृषि विभाग ऐसी मोबाइल एप विकसित करने में लगा है, जिससे कि किसान जल्दी से वैज्ञानिकों से सीधे तौर पर

बांगड़, हमेटी के डायरेक्टर डॉ. हरदीप सिंह भी उपस्थित रहे। डॉ. सुनील ढांडा ने इस कार्यशाला में मंच संचालन कर सभी उपस्थित अधिकारियों व वैज्ञानिकों का धन्यवाद जापित किया। इस कार्यशाला में रखी मौसम की फसलों पर निप्रतिष्ठित सिफारिशों स्वीकृत की गई। अर.एच 1424 : राया कीं यह



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पहाड़ केसीटी	03-09-23	03	4-8

कन जोत गाले किसानों की समस्याओं को समझकर करें अनुसंधान : प्रो. काम्बोज

► हक्कुवि में 2 दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न

हिसार, 2 सितम्बर (ब्लूरो) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित 2 दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रबी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।



हक्कुवि में आयोजित 2 दिवसीय राज्यस्तरीय कार्यशाला में मौजूद अधिकारीगण। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। कुलपति ने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग

का जल्दी निवारण होना चाहिए, जिसके लिए कृषि विभाग ऐसी मोबाइल एप विकसित करने में लगा है, जिससे कि किसान जल्दी से वैज्ञानिकों से सीधे तौर पर जुड़कर अपनी समस्याओं का समाधान ले सकें।

उन्होंने कहा कि इनमें यह एप इस तरह डिजाइन की जाएगी कि जल्दी से किसान जल्दी से समस्या व इससे संबंधित निवारण के लिए विडियो भी ढूँढ सकें। ए.सी.एस. ने यह भी सुझाव दिए कि कृषि अधिकारी किसान के खेत पर लगे हुए प्रदर्शन प्रक्षेत्र की वीडियो बनाकर भी अन्य किसानों के साथ शेयर करें। उन्होंने गते की अधिक पैदावार देने वाली किसी के बारे अधिक जागरूकता फैलाने के साथ ही प्रोत्साहन राशि देकर उनका रकबा बढ़ाने की बात कही। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं सिंह भी उपस्थित रहे।

मोबाइल एप से जुड़ सकेंगे किसान व वैज्ञानिक

अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
भूमि भ्राता २०२३	०३-०९-२३	०५	५-४-

समारोह • हक्कवि में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला के समापन अवसर पर बोले वाइस चांसलर / कम जोत वाले किसानों की समस्याओं को समझकर करें अनुसंधान

नई शोध की गई
सिफारिशें किसानों तक
पहुंचाने का आह्वान

मासम न्यूज़ | हिसार

कृषि वैज्ञानिक कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे होंगे से समझें, उसके बाद उन समस्या के निवापन पर शोध करें। यह बात खौफी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सम्पादक में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला के समापन समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अधिकारी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा। उन्होंने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों से आह्वान किया कि शोध की गई नई

सिफारिशों को ऐसे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को ध्यान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपके के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। कृषि वैज्ञानिकों और अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के सामाजिक तथा वैज्ञानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें किसान के खेत में आई समस्या के सामाजिक तथा वैज्ञानिक अपनी बातों के बारे में समझें लेकर जाते हैं। तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुसुप्त ही अपनी शोध कार्य प्रयोग करके चलते हैं ताकि ये समस्या देखा जाना आए व किया कि शोध की गई नई



कृषि संबंधित समस्याओं के निवापन के लिए मोबाइल एप र्स जुड़ सकेंगे किसान व वैज्ञानिक : एसीएस सुधीर राजपाल

अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कूरुपति महाराजा प्रताप बामवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल ने कहा कि किसानों की समस्याओं का जल्दी निवापण होना चाहिए, जिसके लिए कृषि विभाग एसीएस बोर्ड करने में लगा है, जिससे कि किसान जल्दी से वैज्ञानिकों से सीधे तौर पर जुड़कर अपनी समस्याओं का समाधान ले सकें। उन्होंने कहा कि इनमें यह एप

इस तरह डिज़ाइन की जाएगी कि जल्दी से किसान जल्दी से समस्या व इससे संबंधित निवापन के लिए बीड़ियों भी ढूँढ सकें। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानंदेश्वर डॉ. नरसीं चांगड़, हमीटी के डायरेक्टर डॉ. हरदेव सिंह भी उपस्थित हैं, जिसकी वय 2023 में जम्मू-पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं संचालन कर सभी उपरियोग अधिकारियों व वैज्ञानिकों का धन्यवाद गापित किया।

कार्यशाला में रबी मौसम की फसलों पर निम्नलिखित सिफारिशें स्वीकृत की गई

- आर.एच 1424 : यह की गयी विस्त्रित मात्रा पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी गणराज्यों के बारानी क्षेत्रों में समय पर बिजाई के लिए वर्ष 2023 में अनुमोदित की गई है। यह विस्त्रित मात्रा 38.0 प्रतिशत है।
- गर्ज की फसल में टॉप बोर व अर्निश्ट बोर को विभेदित करने वाले कीटनाशक, जिसका नाम पहले गड़नासिर 201सी कोरेजन से बदलकर क्लोरनट्रिनिलिप्रोल 18.5 एस.सी कोराजन हो गया है।
- गर्ज की फसल में टॉप बोर व अर्निश्ट बोर को विभेदित करने वाले कीटनाशक, जिसका नाम पहले गड़नासिर 201सी कोरेजन से बदलकर क्लोरनट्रिनिलिप्रोल 18.5 एस.सी कोराजन हो गया है, जिससे कि किसान इसको न लगाए।
- मक्का की संकर किस्म एच एच एम -1 में मेडिश लीफ ब्लाइट व रुआ की समस्या बढ़ते से इस किस्म को समग्र सिफारिशों से हटाया गया है, जिससे कि किसान इसको न लगाए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिप्यूल	03-09-23	08	4-5

‘कृषि वैज्ञानिकों व अधिकारियों के तालमेल से होगा किसानों का भला’



हिसार स्थित छक्की में आयोजित दो दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में मौजूद अधिकारी। -एप्प हिसार, 2 सितंबर (अ)

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित 2 दिवसीय राज्यस्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शनिवार को समाप्त हो गया। इसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कामोज रहे, जबकि विशेष अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं

किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। प्रो. कामोज ने कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारियों का आङ्गन किया कि शोध की नई सिफारिशों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के तालमेल से ही किसान का भला हो सकता है। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि बांगड़, हमेटी के डायरेक्टर डॉ. हरदीप सिंह भी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कृष्ट	03-09-23	05	।

कार्यशाला आयोजित।

हिसार (चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित दो विषयीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ। इस दैरान मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. वी.आर काम्बोज रहे, जबकि विशेष अतिथि अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर राजपाल व महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। कार्यशाला में प्रदेशभर के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में रखी फसलों की समग्र सिफारिशों के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज़	02.09.2023	--	--

हृषि में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला संपन्न कम जोत वाले किसानों की समस्याओं को समझकर करें अनुसंधान : बी.आर. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज़, हिसारा चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सम्पादन में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के चूनापति प्रो. डॉ. बी.आर. काम्बोज और जब्ति कृषि अधिकारी अधिकारीक मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं चूनापति महाविद्यालय, करनाल सुधीर याज्ञवल के महानिदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बगड़ मौजूद रहे। इस कार्यशाला में प्रदेशभू के कृषि अधिकारियों के साथ वैज्ञानिकों ने कार्यशाला में गवीं फसलों की समस्याओं के बारे में विस्तृत चर्चा की गई तथा कई महत्वपूर्ण तकनीकी पालनुअंग पर विचार विमर्श विलग गया।

मुख्य अधिकारी प्रो. डॉ. आर. काम्बोज ने कार्यशाला में उपस्थिति विभाग से आहवान विभाग के आप की गई नई सिस्टमिकों को पूरे प्रदेश में किसानों तक पहुंचाना होगा। मध्य-माध्य कृषि वैज्ञानिकों को फसलों की मुख्य समस्याओं को खान में रखकर शोध करने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों व कृषि अधिकारियों के आपस के वालसन से ही किसान का भला हो सकता है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहाँ कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व परेश के कृषि अधिकारियों की कार्यशाला अव्योनित की जाती है जिसमें किसान के संत में आई समस्या का समाधान के लिए कृषि अधिकारी अपनी बात वैज्ञानिक के पास लेकर जाते हैं तथा वैज्ञानिक इन समस्याओं के अनुस्पृह ही अपनी शोध कार्य प्रयत्न करके चलते हैं ताकि ये समस्या दौड़ाया न अब व किसान की आमदानी बढ़े। कृत्यान्ति ने वैज्ञानिकों से आहुन किया कि वे कम जोत के किसानों की समस्या को पहले अच्छे ढंग से समझें, उसके बाद उन समस्या के विवरण पर शोध करें।



दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला में बैठक अधिकारीका

कार्यशाला में रखी मोसम की फसलों पर नियम विभागिते स्वीकृत की गई

1. अटाएप 1424 - राय वी यह किटन बज्जु, पानी, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के बाटी देशी सूखा पर बिगड़ के लिए वर्ष 2023 में अव्योनित की गई है। यह किटन 137-140 दिनों में पकाकर तैयार हो जाती है तथा 10.5-11.0 किटल पर्ति एकड़ औरत प्रदान होती है। इसकी कफिला लीवी व बोटी देशी है व इसके दालों का आकारी व ब्रह्म देशी है। इस किटन में तेल की औसत जाता 38.0 प्रतिशत है।
3. गजे वी फसल जै टाप बोट व अलिंगू बोट को विभागित करके वाले घैटनाशक, जिसका नाम पहले टड़लरिंग 20 इंच (कोरोना) से बदलायर लोटेटन्गुलिलिंग 18.5 इंच (कोरोना) से बदला है।
2. अटाएप 1705 - यह विश्वविद्यालय की राय वी पहली तेल गुणवत्ता युक्त उत्तर किटन है, जिसकी वर्ष 2023 में जब्जु, पानी, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के सिवित देशी में
4. काजा की साल किटन एप एप एन - 1 में लेडिया लीफ ब्राइट व रातुआ वी सकारात्मा बढ़ों से इस किटन की साल किटारियों से सकारा गया है, जिससे कि जिसका इसको न लगाए।

कृषि संबंधित समस्याओं के निवारण के लिए मोबाइल एप से जुड़ सकेंगे किसान व वैज्ञानिक

अतिथि मुख्य सचिव कृषि एप किटन कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कृत्यान्ति महाविद्यालय प्रादान कागजाती विश्वविद्यालय, करनाल सुप्रीट टणपाल वै काल विभाग वी तानस्याओं का जल्दी विवाहण लेना चाहिए, जिसके लिए कृषि विभाग वी तानस्याएल एप विकसित करने में लगा है, जिससे कि किटन जल्दी से वैज्ञानिकों से तीव्र रौप्य पूर्ण रूप से अपनी गुणवत्ता का सामाधान ले सकें। उन्होंने कहा कि इनकी राय एप इस तरह डिजिटल वी जारी की जल्दी विवाहण जल्दी से सकारात्मा व उत्तरी सकारात्मा विभाग के लिए लैंडिंगों वी दृढ़ सकारा एसेस जै यह वी सुझाव दिए कि कृषि अधिकारी किटन के खेत पर लावी दृढ़ प्रटर्निंग प्रोजेक्ट वी विभिन्नों कानूनक वी अल्ट किसानों के साथ शेयर करें। उन्होंने गंभी वी अधिकारी विभाग टेली वाली किटनों के बारे अधिक जागरूकता फैलाने के साथ ही प्रोत्तद्वारा राशि देकर उनका टक्का बढ़ाने की बात कही।

इस अवसर पर कृषि एप किटन कल्याण विभाग, हरियाणा के महानिदेशक डॉ. नरहरि बगड़, हमेंटी के उत्तरोक्तर डॉ. हरदीप सिंह भी उपस्थित रहे। डॉ. सुनील दांडा ने इस कार्यशाला में मध्य सचालन कर सभी उपस्थित अधिकारियों व वैज्ञानिकों का धन्यवाद द्वापित किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	02.09.2023	--	--

कम जोत वाले किसानों की समस्याओं को समझाकर करें अनुसंधान : प्रो. काम्बोज
हक्कविं में दो दिवसीय राज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का समापन हआ

पाठक पक्ष न्यूज
हिमाचल ३ सितंबर : कौपी
चरण शिंदे हरियाणा कृषि
विभागिकाय के कृषि यथा विभागिकाय
के सम्बन्ध में आवश्यक दो विविध
राज्य सहीय कृषि अधिकारी
का कैलां का सम्बन्ध है, विविध
प्रदेश अधिकारी विभागिकाय के
कुलपति से, वो जार करोग ये,
जबकि विभाग अधिकारी अधिकारीक
प्रदेश अधिकारी कृषि एवं किसान
कल्याण विभाग, हरियाणा एवं
कुलपति यहाँ प्रत्येक बालाकी
विभागिकाय, करनाल सुधौर
राजपति व महानिदेशक, कृषि एवं
विभाग बालाका विभाग अंतर्भुत
बोल्ड गोड ये। इस बालाका में
प्रदेशाधिकारी के कृषि अधिकारीर्हों के
साथ विभागिकी वे कार्रवाला में रखी
फलों की सम्पर्कितियों के पास
में विभूत उच्ची की गई तथा कई
महालक्ष्मी तकनीकी परम्पराओं पर
विभाग विभागी किया गया।

प्रस्तुतियाँ प्री. चौ. भार.
काल्पनिक वे प्रस्तुतियाँ में एकमित
कृषि अधिकारियों से आवाहन किया
कि गोप वी. पर्स नई विधियों को
पूरे प्रदेश में विस्तारी तक पार्ह कराया
हो। साथ-साथ कृषि वैज्ञानिकों
की फलों की मरण सम्बन्धीत को



भारत में राजनीति सीधे करने के लिए प्रयत्न किया। उन्होंने कहा कि कृषि विधानिकों व कृषि अधिकारियों के आवास के लकड़ील में ही विधान का भवा ही स्थान है। हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जहा कृषि विधानिकाओं के विधानिक व प्रदेश के कृषि अधिकारियों की कार्यालयाएँ

इस अवसर पर कृषि विधान कार्यालय विधान, हारियाणा के महानगरीयक टॉ बहरि बांगल, दमोही के लकड़ील टॉ, हरियाणा मिल भी उपस्थित हैं। इस मुकेश दीपने द्वारा कार्यालय में येर बोलान कर सभी उपस्थित अधिकारियों व विधानिकों का स्मरण ग्राहित किया।

इस कार्यक्रम में जीवी संग्रह की वर्षातों पर विविधिक विद्यार्थी स्पष्टक आये।

यैशानिकों के पास लेकर जाते हैं तभी यैशानिक इन सम्पत्तियों के अनुबंध द्वारा अपनी शोषण कार्रवां पारके बनते हैं ताकि वे सम्पत्ति दैवतान न आए व किसान जी का छापड़ने चाहे। कुरायति ने यैशानिकों से आवाजन किया कि वे कम्प बोर्ड के किसानों की सम्पत्ति को पहले भर्ते हुए मेरा बाधा, उसके बाद तून सम्पत्ति के किसानों पर शोषण करें।

1. अर्थात् 1424 : यैशा की यह किस्म जम्मू, कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली एवं उत्तरी राजस्थान के बाजारीं से भी यैशा पर विवाह के लिए वर्ष 2023 में अकृतित की गई है। यह किस्म 137-140 दिनों में प्रकाश दिया हो जाता है तथा 10.5-11.0 ग्राम प्रति प्रकाश और 80 पैटेलार लेती है। इसको फौलाया लंबी व घोटी रोटी है जो

कृषि संवर्धित समस्याओं के निवारण के लिए मोबाइल एप से जुड़ सकेंगे किसान व वैज्ञानिक : एसीएस

एप्प दो ग्राउंड सर्केंगे किसान व खेजानिक : एसीएस

इसके दावों का अधार भी बहुत होता है। इस कित्या में जेल की संख्या नाम 40.5 प्रतिशत है। 3. गोपी और 4. अवृत्तिहार चोपड़ा

3. गो की फसल में होम और
विनियोग दोष को नियंत्रित करने

2 अप्रैल 1705 : यह विश्वविद्यालय की राया की पहली ऐसे ग्रन्थाचं प्रकल्प उत्तम किया है, जिसकी वर्ष 2023 में आम् प्रयोग, दृष्टिकोण, विभिन्न रूपों ग्रन्थाचं

4 यहाँ की संक्षिप्त किसी एक एवं एक पा. 1 में प्रतिक्रिया को लिखा है। इस किसी को समझ प्रतिक्रिया में दृष्टि किसी न लगाया गया है, जिससे कि किसीने इसको न लगाया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष न्यूज	02.09.2023	--	--

3

देश की खाद्य सुरक्षा किसानों के खेत से होकर निकलती है : काम्बोज

एचएयू वैज्ञानिकों एवं प्रदेश के कृषि अधिकारियों की वर्कशॉप, फसलों में नई समग्र सिफारिशों के लिए दो दिन करेंगे मंथन

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 2 सितम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सभागार में आज से दो दिवसीय गृज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का शुभारंभ हुआ, जिसमें पुख्त अंतिथि विश्वविद्यालय के कलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि विशिष्ट अंतिथि अतिरिक्त पुख्त सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कलपति महावाणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर गजपाल ब महानिंदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ मौजूद रहे। पुख्तातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि देश की खाद्य सुरक्षा किसानों के खेतों से होकर निकलती है। संसाधान संस्करण व फसलों की गुणवत्ता आज के पुख्त विषय है। फसलों का चक्र अपनाकर व मोटे अनाज की खेती करके भी संसाधनों का संरक्षण किया जा सकता है। खेती करने की पुरुने पद्धतियों को छोड़कर हमें किसानों को पार्केटिंग और एग्री-बिजनेस के लिए प्रेरित करना होगा। उन्होंने युवाओं की कृषि क्षेत्र में कम रुचि को देखकर चिंता भी जताई और उन्होंने युवाओं को आईटी, पोद्याइल व डीएन जैसी उत्तर तकनीकों का उपयोग कर खेती में योगदान के लिए आश्वान किया।

कलपति ने बीते दो सालों में विभिन्न फसलों की 18 नई किसीं देने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को बधाई भी दी और उन्होंने ऊत किस्मों के बीज उत्पादन के लिए रोड मैप तैयार करने का भी आश्वान किया। उन्होंने कृषि विभाग, हरियाणा और लूक्यि को एक ही धूरी के परिधि बताया, जिनका एकमात्र लक्ष्य किसानों के हित में काम करना है। उन्होंने बताया कि समय-समय पर किसानों को फसलों से संबंधित जानकारी देने के लिए लगातार एडवाइजरी जारी कर रहा है। महानिंदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग डॉ. नरहरि बांगड़ ने उन्होंने खेतीबाड़ी को वैज्ञानिक तरीके से करने पर जार दिया, जिसके लिए हरियाणा सरकार द्वारा मिट्टी जांच प्रयोगशालाएं बढ़ाई गई हैं, जिसके तहत मिट्टी में आवश्यकता अनुसार संतुलित पोषक तत्वों का उपयोग किया जा सके। उन्होंने गृज्य सरकार की ओर से किसानों के हित में चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि किसान विश्वविद्यालय से जुड़कर वैज्ञानिकों द्वारा विकसित कई गई विभिन्न फसलों की ऊत किस्मों का लाभ उठाए। विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने वर्कशॉप की विस्तृत विभाग, हरियाणा द्वारा किसानों के



कृषि को व्यवसाय के रूप में विकसित करना समय की मांग : एसीएस सुधीर राजपाल

अतिरिक्त मुख्य सचिव कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा एवं कुलपति महावाणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय, करनाल सुधीर गजपाल ने दो दिवसीय गृज्य स्तरीय कृषि अधिकारी कार्यशाला के पहले दिन अधिकारियों की भारी संख्या में उपस्थिती देखकर बधाई दी। उन्होंने कृषि क्षेत्र में मशीनीकरण और नई तकनीकों को अपनाकर उत्पादकता बढ़ाने को इस मंगोली का मुख्य उद्देश्य बताया। उन्होंने कहा कि समय से पहले योजनाएं बनाकर और खेतीबाड़ी को एग्री-बिजनेस में जोड़कर किसानों की आय को बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने खेतीबाड़ी में आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए वैज्ञानिकों अधिकारियों और आइटी व कृषि उद्योगों से जुड़े विशेषज्ञों को किसानों के हित के लिए एक साथ आने की जरूरत है। उन्होंने इस बार बाजरे की फसल में आई अमेरिकन मूंदी के प्रकोप को चर्चा की और विश्वविद्यालय से मिले सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

हित में चलाई जा रही योजनाओं व उपलब्धियों के बारे में बताया। कार्यशाला में मंच का संचालन डॉ. सुनील ढांडा ने किया, जबकि कृषि महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. एस.के. पाहुज ने धन्यवाद प्रस्ताव जापित किया। इस अवसर पर खींची व खीरी की सुधार सहित समग्र सिफारिशें नामक पुस्तिका का भी विमोचन किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
पंजाब के सरी

दिनांक
03-09-23

पृष्ठ संख्या
०५

कॉलम
५-६

‘स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शैर्य गाथा’ विषय पर संगोष्ठी आयोजित

हिसार, 2 सितम्बर (ब्यूरो): पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार की ओर से ‘स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शैर्य गाथा’ विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता दयानंद महाविद्यालय के इतिहासकार प्रो. महेंद्र सिंह उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता प्रो. महेंद्र सिंह ने संगोष्ठी को संबोधित करते हुए कहा कि विदेशी शक्ति के अनुसार 1757 से 1857 के बीच भारत देश पर कब्जा करने को लेकर कोई भी बड़ा संघर्ष नहीं हुआ, जोकि असत्य धारणा है। जबकि सच यह है कि उस दौर में देश के 283 स्थानों पर विदेशी ताकत के खिलाफ छोटे पैमाने पर बगावत शुरू हुई थी।

उन्होंने बताया कि अकेले हरियाणा में 17 बार विदेशी शक्ति को छोटे स्तर पर चुनौतियाँ भी दी गईं। लेकिन इमारे पर्वतों ने कम समय में ही समझ लिया कि इस तरह के छोटे स्तर पर लड़ाई लड़ने पर जीत हासिल नहीं की जा सकती। 1757 से 1857 के इस दीर्घकालीन अवधि में विदेशी शक्ति द्वारा जारी शहादतों के आंकड़ों पर नजर डालें तो उस समय 1.80

» हरियाणा ने 17 बार विदेशी शक्तियों को दी थी चुनौतियाँ

लाख लोग शहीद हुए, जिसमें से साढ़े 24 हजार लोग हरियाणा के थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के प्रति उस समय 6 लाख से अधिक लोगों ने देश के प्रति कुर्बानियाँ दी, जिनमें से हरियाणा के 82 हजार लोग शामिल थे, जबकि अकेले हिसार की बात की जाए तो इनमें से 10 हजार लोगों ने उस समय अपनी शहादत दी थी।

मुख्य वक्ता ने बताया कि जब बड़े पैमाने पर पेशावर से संग्राम शुरू हुआ तो सीधे तौर पर 59 जगहों पर लोगों को तोप से उड़ाया गया, जबकि 35 अलग-अलग जगहों पर रोल रोलर से लोगों को कुचला गया। इनमें तोपों से उड़ाने की प्रक्रिया लंबी चली।

इसी कड़ी में हरियाणा में 9 अलग-अलग जगहों पर तोप से लोगों को उड़ाया गया, 16 अलग-अलग जगहों पर रोल रोलर से लोगों को कुचला गया। उन्होंने बताया कि आज हरियाणा में 53 गांव ऐसे हैं, जिनके

नामों-निशान तक नहीं हैं।

उन्होंने कहा कि 1858 से 1863 तक अंग्रेजी पत्राचार के अनुसार भारत के 1857 के संग्राम को लिखने के लिए 93 लोगों को नियुक्त किया गया, जिन्हें विशेष तौर पर हिदायतें दी गईं कि लेख की प्रस्तुतिकरण कुछ तरह से लिखी हो कि जिसमें अंग्रेजों की तोहीन न हो और स्थानीय नागरिक नायक-नायिकाओं के रूप में न उभर पाए।

साथ ही इस लेख के सही विश्लेषण पर लिखने, पढ़ने व समझने के लिए हमारे ऊपर पार्वदियाँ भी लगा दी गईं। अतः विदेशी शक्तियों ने भारत के इतिहास को तोड़-मरोड़कर, तथ्यहीन व गलत आंकड़ों के सहित प्रस्तुत किया है, जबकि सच्चाई इसके विपरीत है।

इस संगोष्ठी का मंच संचालन मोहित कुमार ने किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस अवसर पर डॉ. जगबीर सिंह, ज्ञानचंद बंसल के अलावा शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
४१ अक्टूबर २०२३	०३-०९-२३	०२	३-५

भारत के स्वर्णिम इतिहास को विदेशी ताकतों ने तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया : प्रो. महेंद्र

‘स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शौर्य गाथा’ विषय पर मुख्य वक्ता ने अनुभव साझा किए

भारतर न्यूज | हिसार

पचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र की ओर से ‘स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शौर्य गाथा’ विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता दयानंद महाविद्यालय के इतिहासकार प्रो. महेंद्र सिंह उपस्थित रहे। प्रो. महेंद्र सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि विदेशी शक्ति के अनुसार 1757 से 1857 के बीच भारत देश पर कब्जा करने को लेकर कोई भी बड़ा संघर्ष नहीं हुआ, जोकि असत्य धारणा है। जबकि सच यह है कि उस दौर में देश के 283 स्थानों पर विदेशी ताकत के खिलाफ छोटे पैमाने पर बगावत शुरू हुई थी। उन्होंने बताया कि अकेले हरियाणा में 17 बार विदेशी शक्ति को छोटे स्तर पर

चुनौतियां भी दी गईं। लेकिन हमारे पूर्वजों ने कम समय में ही समझ लिया कि इस तरह के छोटे स्तर पर लड़ाई लड़ने पर जीत हासिल नहीं की जा सकती। 1757 से 1857 के इस दीर्घकालीन अवधि में विदेशी शक्ति द्वारा जारी शहादतों के आंकड़ों पर नजर डालें तो उस समय 1.80 लाख लोग शहीद हुए, जिसमें से साढ़े 24 हजार लोग हरियाणा के थे।

प्रो. महेंद्र सिंह ने कहा कि राष्ट्र के प्रति उस समय 6 लाख से अधिक लोगों ने देश के प्रति कुबानियां दी, जिनमें से हरियाणा के 82 हजार लोग शामिल थे, जबकि अकेले हिसार की बात करूं तो इनमें से 10 हजार लोगों ने उस समय अपनी शाहदता दी थी। मुख्य वक्ता ने बताया कि जब बड़े पैमाने पर पेशावर से

संग्राम शुरू हुआ तो सीधे तौर पर 59 जगहों पर लोगों को तोप से उड़ाया गया, जबकि 35 अलग-अलग जगहों पर रोल रोलर से लोगों को कुचला गया। इनमें तोपों से उड़ाने की प्रक्रिया लंबी चली। इसी कड़ी में हरियाणा की बात करूं तो 9 अलग-अलग जगहों पर तोप से लोगों को उड़ाया गया, 16 अलग-अलग जगहों पर रोल रोलर से लोगों को कुचला गया। मुख्य वक्ता ने बताया कि आज हरियाणा में 53 गांव ऐसे हैं, जिनके नामे-निशान तक नहीं हैं। उन्होंने कहा कि अगर मैं इसी सिवके के दूसरे पहलू की बात करूं तो 1858 से 1863 तक अंग्रेजी पत्राचार के अनुसार भारत के 1857 के संग्राम को लिखने के लिए 93 लोगों को नियुक्त किया गया, जिन्हें विशेष तौर पर हिंदायतें दी गईं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

अजीत खाना॑

दिनांक

03-09-23

पृष्ठ संख्या

04

कॉलम

6-8

भारत के सर्विम इतिहास को विदेशी शक्तियों ने तथ्यहीन, गलत / आंकड़ों सहित तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया : प्रो. महेंद्र सिंह

हिसार, 2 सितम्बर (विनेद्र वर्षी) : पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार की ओर से 'स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शीर्ष गाथा' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य यक्ता दयानंद महाविद्यालय, हिसार, इतिहासकार प्रो. महेंद्र सिंह उपस्थित थे। मुख्य वक्ता प्रो. महेंद्र सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि विदेशी शक्ति के अनुसार 1757 से 1857 के बीच भारत देश पर कब्जा करने को लेकर कोई भी बड़ा संघर्ष नहीं हुआ, जोकि असत्य धारणा है। जबकि सच यह है कि उस दौर में देश के 283 स्थानों पर विदेशी ताकत के खिलाफ छोटे पैमाने पर बगावत शुरू हुई थी। उन्होंने बताया कि अकेले हरियाणा में 17 बार विदेशी शक्ति को छोटे स्तर पर चुनौतियाँ भी दी गईं। लेकिन हमारे पूर्वजों ने कम समय में ही समझ लिया कि इस तरह के छोटे स्तर पर लड़ाई लड़ने पर जीत हासिल नहीं की जा

सकती। 1757 से 1857 के इस दीर्घकालीन अवधि में विदेशी शक्ति द्वारा जारी शहदतों के आंकड़ों पर नजर डालें तो उस समय 1.80 लाख लोग शहीद हुए, जिसमें से साढ़े 24 हजार लोग हरियाणा के थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के प्रति उस समय 6 लाख से अधिक लोगों ने देश के प्रति कुबानियाँ दी, जिनमें से हरियाणा के 82 हजार लोग शामिल थे, जबकि अकेले हिसार की बात कर्तुं तो इनमें से 10 हजार लोगों ने उस समय अपनी शहदता दी थी। मुख्य वक्ता ने बताया कि जब बड़े पैमाने पर पेशावर से संघाम शुरू हुआ तो सीधे तीर पर 59 जगहों पर लोगों को तोप से उड़ाया गया, जबकि 35 अलग-अलग जगहों पर रोल रोल से लोगों को कुचला गया। इनमें लोपों से उड़ाने की प्रक्रिया लंबी चरी। इसी कड़ी में हरियाणा की बात कर्तुं तो 9 अलग-अलग जगहों पर तोप से लोगों को उड़ाया गया, 16 अलग-अलग जगहों पर रोल रोल से

लोगों को कुचला गया। मुख्य वक्ता ने बताया कि आज हरियाणा में 53 गांव ऐसे हैं, जिनके नामों-निशान तक नहीं हैं। उन्होंने कहा कि अगर मैं इसी सिफे के दूसरे पहलू की बात करूं तो 1858 से 1863 तक अंग्रेजी प्रशाचार के अनुसार भारत के 1857 के संग्राम को लिखने के लिए 93 लोगों को नियुक्त किया गया, जिन्हें विशेष तौर पर हिदायतें दी गई कि लेख की प्रस्तुतिकरण कछु तरह से लिखी हो कि जिसमें अंग्रेजों की तोहीन न हो और स्थानीय नागरिक-नायक-नायिकाओं के रूप में न उपर पाए। साथ ही इस लेख के सभी विश्लेषण पर लिखने, पढ़ने व समझने के लिए हमारे ऊपर पांचदिया भी लगा दी गई। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगदीर सिंह, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल अन्य सदस्यगण, शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक फ्रिपुन	०३-०९-२३	०३	१-२

आजादी के संग्राम में ९ जगह उड़ाया था तोपों से, १६ जगह चले रोड रोलर

हिसार, २ सितंबर (एप्र)

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जब बड़े पैमाने पर पेशावर से संग्राम शुरू हुआ तो सीधे तौर पर ५९ जगहों पर लोगों को तोप से उड़ाया गया जबकि ३५ अलग-अलग जगहों पर रोड रोलर से स्वतंत्रता सेनानियों को कुचला गया। इनमें तोपों से उड़ाने की प्रक्रिया लंबी चली। इसी कड़ी में हरियाणा की बात करें तो ९ अलग-अलग जगहों पर तोप से लोगों को उड़ाया गया और १६ अलग-अलग जगहों पर रोड रोलर से लोगों को कुचला गया। आज हरियाणा में ५३ गांव ऐसे हैं, जिनका नामो-निशान तक नहीं है। यह बात इतिहासकार प्रो. महेंद्र सिंह ने शनिवार को पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार की ओर से 'स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शैर्य गाथा' विषय पर आयोजित संगोष्ठी को बतौर मुख्य बक्ता संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने बताया कि इतिहास में ऐसा लिखा गया है कि १७५७ से १८५७ के बीच भारत देश पर कब्जा करने को लेकर कोई भी बढ़ा संघर्ष नहीं हुआ, जोकि असत्य है। सच यह है कि उस दौर में देश के २८३ स्थानों पर विदेशी ताकत के खिलाफ छोटे पैमाने पर बगावत शुरू हुई थी। अकेले हरियाणा में १७ बार विदेशी शक्ति को छोटे स्तर पर चुनौती दी गई, लेकिन हमारे पूर्वजों ने कभी समय में ही समझ लिया कि इस तरह के छोटे स्तर पर लड़ाई लड़ने पर जीत हासिल नहीं की जा सकती। इस संगोष्ठी का मंच संचालन मोहित कुमार ने किया जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार जे धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर पंचनद शोध संस्थान, अध्ययन केंद्र, हिसार के अध्यक्ष डॉ. जगवीर सिंह, सलाहकार शनिवार बंसल अन्य सदस्यण, शहर के विभिन्न संस्थानों के गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	02.09.2023	--	--

भारत के स्वर्णम इतिहास को विदेशी शक्तियों ने तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया : प्रो. महेंद्र

पांच बजे न्यूज

हिसार। पंचनद शोध सम्पादन, अध्ययन केंद्र, हिसार की ओर से 'स्वाधीनता समर में युवा शक्ति की शैर्य गाथा' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता दयानंद महाविद्यालय, हिसार, इतिहासकार प्रो. महेंद्र सिंह उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता प्रो. महेंद्र सिंह ने संबोधित करते हुए कहा कि विदेशी शक्ति के अनुसार 1757 से 1857 के बीच भारत देश पर कब्जा करने को लेकर कोई भी बड़ा संघर्ष नहीं हुआ, जोकि असत्य धारणा है। जबकि सच यह है कि उस दौर में देश के 283 स्थानों पर विदेशी ताकत के खिलाफ छोटे पैमाने पर बगावत शुरू हुई थी। उन्होंने बताया कि अकेले हरियाणा में 17 बार विदेशी शक्ति को छोटे स्तर पर चुनौतियां भी दी गईं। लेकिन हमारे पूर्वजों ने कम समय में ही समझ लिया कि इस तरह के छोटे स्तर पर लड़ाई लड़ने पर जीत हासिल नहीं की जा सकती। 1757 से 1857 के इस दीर्घकालीन अवधि में विदेशी शक्ति द्वारा जारी शहादतों के आंकड़ों पर नजर डालें तो उस समय 1.80 लाख लोग शहीद हुए, जिसमें से साढ़े 24 हजार लोग हरियाणा के थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के प्रति उस समय 6 लाख से अधिक लोगों ने देश के प्रति कुर्बानियां दी, जिनमें से हरियाणा के 82 हजार लोग शामिल थे, जबकि अकेले हिसार की बात करने तो इनमें से 10 हजार लोगों ने उस समय अपनी

शाहदता दी थी। मुख्य वक्ता ने बताया कि जब बड़े पैमाने पर पेशावर से संग्राम शुरू हुआ तो सीधे तौर पर 59 जगहों पर लोगों को तोप से उड़ाया गया, जबकि 35 अलग-अलग जगहों पर रोल रोलर से लोगों को कुचला गया। इनमें तोपों से उड़ाने की प्रक्रिया लबी चली। इसी कड़ी में हरियाणा की बात करने तो 9 अलग-अलग जगहों पर तोप से लोगों को उड़ाया गया, 16 अलग-अलग जगहों पर रोल रोलर से लोगों को कुचला गया। मुख्य वक्ता ने बताया कि आज हरियाणा में 53 गांव ऐसे हैं, जिनके नामों-निशान तक नहीं हैं। उन्होंने कहा कि अगर मैं इसी सिक्के के दूसरे पहलू की बात करने तो 1858 से 1863 तक अंग्रेजी पत्राचार के अनुसार भारत के 1857 के संग्राम को लिखने के लिए 93 लोगों को नियुक्त किया गया, जिन्हें विशेष तौर पर हिदायतें दी गईं कि लेख की प्रस्तुतिकरण कुछ तरह से लिखी हो कि जिसमें अंग्रेजों की तोहीन न हो और स्थानीय नागरिक नायक-नायिकाओं के रूप में न उभर पाए। अतः विदेशी शक्तियों ने भारत के इतिहास को तोड़-मरोड़कर, तथ्यहीन व गलत आंकड़ों के सहित प्रस्तुत किया है, जबकि सच्चाई इसके विपरित है। इस संगोष्ठी का मंच संचालन मोहित कुमार ने किया, जबकि मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर डॉ. जगवीर सिंह, सलाहकार ज्ञानचंद बंसल सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति भी शामिल हुए।